ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

200वीं सदैव सत्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

वर्ष 46 | अंक 43 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 09 अक्टूबर, 2023 से रविवार 15 अक्टूबर, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर उनके सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने का लें संकल्प

धर्मांतरण का सर्वप्रथम शुद्धि आंदोलन चालकर आर्य समाज ने दिया था उत्तर –योगी आदित्यनाथ

आर्य समाज बस्ती का स्वर्ण जयंती समारोह संपन्न

महर्षि की शिक्षाओं के प्रचार का अवसर है 200वीं जयंती –विनय आर्य

माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी को वेद एवं साहित्य भेंट करते हुए सर्वश्री विनय आर्य, ओम प्रकाश आर्य, राकेश सचान, सुभाष यदुवंशी तथा योगी जी का उदबोधन सुनते हुए आर्यजन

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य समाज नई बाजार, बस्ती, उ.प्र. का स्वर्ण जयंती समारोह अत्यंत उत्साह और प्रेरणा के वातावरण में समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर आर्य नेता, विद्वान संन्यासी, भजनोपदेशक, प्रवक्ता और आर्यवीर दल उत्तर प्रदेश के आर्यवीर और आर्य नर, नारी भारी संख्या में उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत और विश्व प्रसिद्ध नेतृत्व क्षमता के आदर्श, धनी, यशस्वी मुख्यमंत्री, योगी आदित्यनाथ जी का विशेष आगमन, उद्बोधन और उत्साहवर्धन अत्यंत प्रेरणादाई सिद्ध हुआ। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपने विशेष उद्बोधन में उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए आधुनिक भारत के निर्माण में आर्य समाज के महत्वपूर्ण योगदान का वर्णन करते हुए भारत और विश्व को आर्य समाज की देन, इस विषय को आधार बनाकर महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत

सर्व प्रथम आर्य समाज बस्ती के कार्यक्रम से शुरू हुआ सार्वजनिक जीवन –योगी आदित्यनाथ

- शेष पृष्ठ 5 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान– (यू.पी.एस.सी.) की नि:शुल्क तैयारी हेतु 2023–24 लिखित परीक्षा कार्यक्रम संपन्न

22 राज्यों के 200 से अधिक चयनित विद्यार्थियों ने दी लिखित परीक्षा

सत्र 2023-24 में सुयोग्य 50 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण देने का है- लक्ष्य

भारत राष्ट्र के नव निर्माण में अहम भूमिका निभाएंगे संस्थान के विद्यार्थी -धर्मपाल आर्य

मानव सेवा के प्रति समर्पित विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास है संस्थान का लक्ष्य -राजकुमार आर्य

यू.पी.एस.सी. की तैयारी हेतु लिखित परीक्षा में आए विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए मंचस्थ सर्वश्री धर्मपाल आर्य, राजकुमार आर्य, सत्यानन्द आर्य, मानवेन्द्र गोयल, संजीव जिंदल, आशीष चन्द्रा, श्रीमती उमा शशि दुर्गा एवं अन्य महानुभाव तथा उपस्थित विद्यार्थीगण।

आधुनिक परिवेश में मध्यमवर्गीय परिवारों के प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति एक कठिन चुनौती है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में ग्रामीण क्षेत्रों के अभावग्रस्त होनहार विद्यार्थी, सुयोग्य होने के बावजूद भी अपने राष्ट्रभक्ति के सपने को पूरा करने में असमर्थ ही रह जाते थे। क्योंकि प्रशासनिक परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए अच्छी कोचिंग अति आवश्यक है, इसके लिए बड़े शहरों में आवास और भोजन सहित समस्त संसाधन सामान्य परिवारों के बच्चों के लिए अंगूर खट्टे वाली कहावत ही सिद्ध होती थी।

किंतु महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से संसार का उपकार करने के लिए संकल्पित आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के माध्यम से भारत के प्रतिभावान विद्यार्थियों को पिछले 6 वर्षों से दिल्ली में अच्छी कोचिंग, भोजन और आवास आदि समस्त सुविधाएं नि:शुल्क प्रदान कर यह सुनिश्चित कर दिया गया है कि अगर आपके अंदर विशेष प्रतिभा है तो आपको राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण के पथ पर आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज के विशेष सेवा प्रकल्प आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा वर्ष 2023-24 को लक्ष्य बनाकर यूपीएससी की परीक्षाओं की तैयारी हेतु पूरे भारतवर्ष के लगभग 22 राज्यों से हजारों आवेदन संस्थान को प्राप्त हुए, आनलाइन परीक्षा की प्रक्रिया पूर्ण होने पर उत्तीर्ण

- शेष पृष्ठ 4 पर

वेदवाणी-संस्कृत

निष्काम कर्मयोग की महती महिमा

वेद-स्वाध्याय

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

-यजु:0 40 । 2

ऋषिः-दीर्घतमाः॥ देवता-आत्मा॥ छन्दः-भुरिगनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- मनुष्य **इह**=इस संसार में **कर्माणि**=कर्मों को **कुर्वन्**=करता हुआ **एव**=ही **शतं समाः**=सौ वर्ष तक **जिजीविषेत्**=जीता रहना चाहे। **एवम्**=इस तरह, पूर्वोक्त प्रकार से त्यागपूर्व कर्म करने से **त्वयि**=तुझ **नरे**=नर में **कर्म**=कर्म न **लिप्यते**=लिप्त नहीं होगा। **इतः अन्यथा**=इसके अतिरिक्त (कर्मलेप से बचने का) और कोई उपाय **न अस्ति**=नहीं है।

विनय- मनुष्य को चाहिए कि वह कर्म करता हुआ ही जीना चाहे। यदि वह कर्म नहीं करता है तो उसे जीवित रहने का अधिकार नहीं है। यह जीवन कर्म करने के लिए ही दिया गया है। हे मनुष्य! क्या तू डरता है कि कर्म करने से तू कर्म में लिप्त हो जाएगा, बँध जाएगा? नहीं, यदि तू पूर्वोक्त प्रकार से त्यागपूर्वक जगत् को भोगेगा, ईशार्पण बुद्धि से अपने सब व्यवहार करेगा, सर्वथा 'मम' - 'अहं' को छोड़कर कर्म करेगा तो तेरे ऐसे कर्म कभी तुझे बन्धनकारक नहीं होंगे। ऐसे निष्काम कर्मों का कभी तुझ 'नर' में लेप नहीं होगा। सचमुच ऐसे निष्काम कर्म करने वाले ही संसार में असली नर होते हैं, व्यवहार को चलाने वाले होते हैं, नेता होते हैं, अतः हे नर! तू अनासक्त होकर त्यागपूर्वक कर्मों को कर। यही कर्मलेप से बचने का उपाय है, बल्कि इस निष्काम कर्म की साधना के सिवाय संसार में और कोई उपाय कर्मलेप से बचने का नहीं है। क्या तू समझता है कि कर्म न करने से तू कर्मलेप से बच जाएगा? अरे भोले! जब तक यह शरीर है, जीवन है, तब तक कर्मत्याग हो ही कैसे सकता है? कुछ-न-कुछ शारीरिक या मानसिक कर्म किये बिना तू जी ही कैसे सकता है? यदि कर्म से बचने के लिए तू आत्मघात भी कर डालेगा, तो भी तुझे छुटकारा नहीं मिलेगा। तुझे दूसरा जन्म लेना पड़ेगा और तुझे इस आत्मघात का पाप भी लगेगा। तू देख कि जिस समय कर्म करना आवश्यक हो उस कर्म न करने से अकर्म का पाप भी लगता है, अतः याद रख कि कर्म त्यागने से तो तुझे कभी निर्लेपता नहीं मिलेगी। इसका साधन तो एक ही है कि कर्म किया जाए, किन्तु निर्लेप होकर किया जाए, अतः हे मनुष्य! तू उठ और इस अकर्म की तामसिक अवस्था को त्यागकर उत्साहपूर्वक निर्लेप कर्मों को किया कर, सर्वथा निरहंकार होकर, सदा प्रभु-अर्पित अवस्था में रहते हुए सहजप्राप्त कर्मों को निःसङ्ग होकर सदा किया कर। ऐसे कर्मों को तू अपने सम्पूर्ण सौ वर्ष तक करता जा, अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक करता जा।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

युद्ध किसी समस्या का उचित समाधान नहीं होता

इजरायल पर हमास के आतंकी हमले पर भारत के रुख से बेरुखी न करें भारतीय

यह सब जानते हैं कि व्यक्ति, परिवार, समाज, संगठन, देश और दुनिया किसी भी स्तर पर युद्ध कभी किसी समस्या का उचित समाधान नहीं होता। लेकिन आजकल विश्व पटल पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लगातार संघर्ष चल रहा है। रसिया और यूक्रेन के बीच युद्ध चलते हुए डेढ़ वर्ष से अधिक हो गये हैं, दोनों देशों की अपार हानि निरंतर हो रही है, लेकिन समाधान कुछ भी नहीं। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी रसिया के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन को युद्ध को टालने की बात कहते हुए यही कहा था कि आज का युग युद्ध का युग नहीं है। यहां पर यह भी विचारणीय है कि वर्तमान में जब दो देशों के बीच युद्ध होता है तो वह केवल दो देशों की सीमित लड़ाई नहीं रहती, बल्कि विश्व स्तर पर दो धड़े बन जाते हैं और फिर युद्ध विराम की स्थिति बड़ी कठिन हो जाती है। क्योंकि सब एक दूसरे को झुकाने के चक्कर में और ज्यादा युद्ध की आग में झुलसते जाते हैं। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण के रूप में हम रसिया और यूक्रेन का युद्ध देख सकते हैं।

आज हम एक नई लड़ाई और प्रत्यक्ष देख रहे हैं। जो कि 7 अक्टूबर 2023 से इजरायल में एक आतंकवाद के रूप में शुरू हुई है। जिसमें वहां पर चल रही म्यूजिक पार्टी के दौरान नाचते गाते सैकड़ों निहत्थे महिलाओं, पुरुषों और बच्चों को अंधाधुंध फायरिंग करके मौत के घाट उतार दिया गया। इस वारदात में वहां के एक घायल व्यक्ति जो अभी तक सदमे में है और जैसे ही वहां का मीडिया उससे बात करने कि कोशिश करता है तो वह फफक फफक कर रोने लगता है, फिर पानी पीकर स्वयं को संतुलित करते हुए बताता है कि जब वहां आतंकवादियों ने पब्लिक पर गोलियां बरसाई तो वह म्यूजिक पार्टी की दूसरी लाइन में ही था और उसके आस-पास, आगे-पीछे के सब लोग पलक झपकते ही मृत्यु के ग्राम बन गये। इस घटनाक्रम को अंजाम देने वाले हमास के आतंकवादी हैं, जिन्होंने इसके बाद वहां की महिलाओं और बच्चियों को अपने कब्जे में लेकर उनके साथ दरिंदगी भी की है और यह घिनौना कार्य वहां अभी तक चल रहा है।

"भारत और इजरायल के रिश्ते जगजाहिर हैं। भारत को इजरायल ने ऐसा निगरानी रखने वाला विमान दिया है जिससे भारत दुश्मन के घर में आसानी से नजर रख पाता है। वर्ष 1999 में जब कारगिल की चोटियों पर पाकिस्तानी सैनिकों ने अड्डा जमा लिया था, तब इजरायल ने ही भारत को बंकर तबाह करने वाले बम दिए थे। भारत के फाइटर जेट ने जब पाकिस्तानी बंकरों पर इन्हें गिराया तो उन्हें भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। इजरायल ने अपने आपातकालीन जखीरे से भारत को ये बम दिए थे जो दोनों देशों के बीच दोस्ती को दर्शाता है। पीएम मोदी के सत्ता में आने के बाद दोनों देशों के बीच दोस्ती एक नई ऊंचाई पर पहुंची है। ऐसे में अब भारत पर सबकी नजरें टिकी रहेंगी। पीएम मोदी ने इस हमले को आतंकी घटना बताकर अपने इरादे साफ कर दिए हैं। लेकिन भारत में ही कुछ लोग अपने राष्ट्र की नीतियों के विरोधी होकर मुखर हो रहे हैं, जो कि किसी भी स्थिति में अनुचित ही है। यह कहावत तो हम बार-बार सुनते हैं कि 'बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना' लेकिन दूसरे की लड़ाई में भारतीय क्यों दीवानेपन की सीमा को लांघ रहे हैं? अपने देश के हितों का ध्यान रखते हुए हमें हर स्तर पर अपने देश के रुख से बेरुखी नहीं करनी चाहिए और अपने देश की नीतियों का अनुकरण करना चाहिए।"

लेकिन हमने जैसा कि आलेख के प्रारंभ में कहा था कि आजकल कोई भी लड़ाई किसी की व्यक्तिगत, परिवारिक, सांगठनिक और देश तक सीमित नहीं रहती उसका असर विश्व पटल पर पड़ता ही पड़ता है। तो इजरायल पर हुए इस हमले के बाद दुनिया दो धड़ों में बंट गई है और इसके साथ ही इस दिल दहलाने वाली घटना को भारत की बड़ी डिप्लोमैटिक परीक्षा भी माना जा रहा है। यह हमला तब हुआ है जब भारत खाड़ी देशों के साथ अपने संबंधों को बढ़ा रहा है। शनिवार को हमास ने रॉकेट हमलों के बाद जब इजरायल में कत्लेआम मचाना शुरू किया तब भारत के प्रधानमंत्री ने ट्विटर पर लिखा, 'आतंकी हमलों की खबर से गहरा सदमा लगा है। हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं निर्दोष पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ हैं। इस कठिन घड़ी में हम इजरायल के साथ एकजुटता से खड़े हैं।'

हालांकि विदेश मंत्रालय ने अभी तक इस पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने सिर्फ पीएम मोदी के ट्वीट को रीट्वीट किया। भारत में भारतीय भी इजरायल को लेकर दो धड़ों में बंटे हुए हैं। एक पक्ष है जो इस हमले की निंदा कर रहा है तो वहीं दूसरे पक्ष का कहना है कि इजरायल फिलिस्तीन पर अत्याचार करता है और यह उसी का परिणाम है। पाकिस्तान के पूर्व पीएम शहबाज शरीफ ने भी इजरायल को ही इसके लिए जिम्मेदार बताया है।

हालांकि अभी एक महीने से भी कम समय पहले अमेरिका, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोपीय संघ ने भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे की घोषणा की थी। पीएम मोदी ने तब कहा था कि यह परियोजना सदियों तक विश्व व्यापार का आधार होगी। इसे चीन के बेल्ट एंड रोड के जवाब में माना जा रहा है। युद्ध का समय भी ऐसा है जब सऊदी और इजरायल अपने संबंधों को सामान्य करने वाले थे। सऊदी ने तत्काल हमलों को रोकने का आह्वान किया है। सऊदी इस शर्त पर इजरायल से संबंध सुधारने को तैयार हुआ था कि फिलिस्तीनियों के अधिकार बढ़ाए जाएंगे। यह युद्ध कॉरिडोर के लिए खतरा हो सकता है। पिछले कुछ वर्षों में भारत और सऊदी के संबंध बढ़े हैं। पीएम मोदी को सउदी ने अपना सर्वोच्च नागरिक

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानंद से क्रमशः साभार

विद्या के स्रोत में स्नान

महर्षि जी का विद्यार्थी जीवन अनुकरणीय था। प्रातःकाल कुछ चने चबा लेते थे, जो उन्हें दुर्गा खत्री की कृपा से प्राप्त होते थे। मथुरा के बहुत से विद्यार्थियों के भोजन का प्रबन्ध बाबा अमरलाल जोशी की ओर से था, स्वामी जी के भोजन का प्रबन्ध भी वहीं पर था। रात्रि में भी सोने से पहले वह कुछ-न-कुछ बहुत-से अभ्यास किया करते थे, जिसके लिए तेल का मासिक खर्च चार आने लाला गोवर्धन सर्राफ से प्राप्त होता था। इसी प्रकार उदार महानुभावों की सहायता से आवश्यकताएं पूरी हो जाती थीं, और शिष्य को गुरु-सेवा करते हुए विद्याध्ययन करने का खुला अवसर मिलता था।

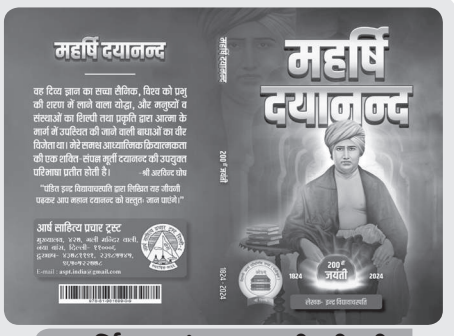

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

क्रमशः गतांक से आगे

स्वामी विरजानन्द जी ने देखा कि लोग सिद्धान्त कौमुदी को पढ़कर सूत्र-क्रम की उपेक्षा करते हैं। भट्टोजिदीक्षित के देखने में सरल परन्तु वस्तुतः दुर्गम ग्रन्थ ने ऋषि-कृत व्याकरण का लोप कर दिया है। उनकी अन्तरात्मा इससे खिन्न होकर प्रचलित पद्धति के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए खड़ी हो गई। विद्रोह के समय प्रायः सीमा का उल्लंघन हो जाता है। दण्डी जी के क्षोभ ने भी जब उग्र रूप धारण किया तब मर्यादा का अतिक्रमण कर दिया, इसमें सन्देह नहीं। ग्रन्थ को नदी में बहाने से कभी उसका लोप नहीं हुआ और न कभी जूतों या पांव के तले रौंदने से उसका प्रचार रुका है। परिणाम प्रायः उल्टा ही होता है। आज भारतभूमि में सिद्धान्त कौमुदी की छपी हुई प्रतियां दण्डी जी के समय की अपेक्षा बहुत अधिक हैं, परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि दण्डी जी का यत्न व्यर्थ गया। जिस सत्य का अनुभव उन्होंने किया और अपने शिष्यों को कराया, उसे देश के एक बड़े भाग ने अंगीकार कर लिया है। आज सूत्र क्रम पर श्रद्धा रखने वाले विद्वानों की संख्या और मूल अष्टाध्यायी की प्रकाशित प्रतियों की संख्या भी दण्डी जी के समय से बहुत अधिक हैं। सत्य ने अपना प्रभाव पैदा किया है। इसकी सहायता में यदि कहीं सीमा का उल्लंघन हो गया था तो वह फल का महत्त्व देखते हुए अब विस्मरण करने योग्य है। जहां एक ओर उसका अनुसरण बिल्कुल त्याज्य है, वहां दूसरी ओर बारम्बार उसे दोहराकर शिकायत करना बुद्धिमत्ता में शामिल नहीं है।

अस्तु, ऐसे दण्डी विरजानन्द जी थे, जिनके द्वार पर कार्तिक सुदी 2, सम्वत् 1917 (14 नवम्बर 1860) के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जाकर आवाज दी। परिचय हो जाने पर दण्डी जी ने पूछा कि क्या कुछ व्याकरण पढ़ा है? महर्षि दयानन्द ने उत्तर दिया कि सारस्वत पढ़ा हूं। इस पर आज्ञा हुई कि पहले सब अनार्ष ग्रन्थ यमुना में बहा आओ, तब आर्ष ग्रन्थ पढ़ने के अधिकारी हो सकोगे। दयानन्द ने आज्ञा का पालन किया और योग्य गुरु के चरणों में बैठकर विद्यामृत-पान का यत्न आरम्भ किया।

महर्षि जी का विद्यार्थी जीवन अनुकरणीय था। प्रातःकाल कुछ चने चबा लेते थे, जो उन्हें दुर्गा खत्री की कृपा से प्राप्त होते थे। मथुरा के बहुत से विद्यार्थियों के भोजन का प्रबन्ध बाबा अमरलाल जोशी की ओर से था; स्वामी जी के भोजन का प्रबन्ध भी वहीं पर था। रात्रि में भी सोने से पहले वह कुछ-न-कुछ बहुत-से अभ्यास किया करते थे, जिसके लिए तेल का मासिक खर्च चार आने लाला गोवर्धन सर्राफ से प्राप्त होता था। इसी प्रकार उदार महानुभावों की सहायता से आवश्यकताएं पूरी हो जाती थीं, और शिष्य को गुरु-सेवा करते हुए विद्याध्ययन करने का खुला अवसर मिलता था।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

उच्च रक्त चाप (हाई ब्लड प्रेशर) तथा इससे जुड़े रोग

क्रमशः गतांक से आगे

हाई ब्लडप्रेशर कंट्रोल के उपाय

कच्चा प्याज खाने से हाई ब्लड प्रेशर काफी कम किया जा सकता है। रात्रि को एक गिलास पानी में एक चम्मच मेथी भिगोकर सवेरे खाली पेट यह पानी पीने से भी हाई ब्लड प्रेशर कम होने लगता है। भीगे हुई मेथी घर में इस्तेमाल की जा सकती है। मेथों का पानी लगभग एक महीने या फिर लगातार भी लिया जा सकता है। सबसे आवश्यक तो यह है कि मानसिक परेशानियों को दूर करके शांतचित रहने की कोशिश करनी चाहिए। बहुत मेहनत का काम तथा लगातार कई घंटे काम नहीं करें। बार-बार सीढ़ियां भी नहीं चढ़ना चाहिए। इसके अतिरिक्त अगर कुछ एक्युप्रेशर विधियों को दिनचर्या का हिस्सा बना लिया जाए तो हाई ब्लड प्रेशर बहुत जल्दी दूर किया जा सकता है।

लो ब्लड प्रेशर-निम्न रक्तचाप

(Low Blood Pressure-Hypotension)

प्रत्येक व्यक्ति की आयु में 90 का अंक जोड़ने से जो संख्या बने वही उस व्यक्ति का ऊपर का अनुकूलतम (optimum) रक्तचाप कहलाता है। अर्थात् अगर एक व्यक्ति की आयु 40 वर्ष है तो उसका रक्तचाप 130 होना चाहिए। पर अगर अधिकतम रक्तचाप 100 से कम हो तो उसे मन्द रक्तचाप समझना चाहिए।

मन्द रक्तचाप मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है (a) symptomatic low blood pressure (b) rising low blood pressure (c) constitutional low blood pressure-

(a) पौष्टिक आहार की कमी के कारण, काफी देर बीमार पड़े रहने, हृदय की किसी बीमारी तथा क्षयरोग (tuberculosis) के कारण symptomatic low blood pressure अर्थात लाक्षणिक 'लो ब्लड प्रेशर' हो जाता है।

(b) जब तक व्यक्ति बिस्तर में लेटा रहता है उसका रक्तचाप ठीक रहता है पर ज्योंही वह चारपाई से उठता (rise) है तो उसे लो ब्लड प्रेशर हो जाता है। इसीलिए इसे 'rising' का नाम दिया गया है। यह विशेषकर शारीरिक तौर पर कमजोर तथा पतली औरतों को होता है। उठने पर उन्हें चक्कर आने लगते हैं।

(c) तीसरी प्रकार का रोग- constitutional low blood pressure अपेक्षाकृत अधिक लोगों में देखा गया है। इसके होने के कोई विशेष कारण नहीं होते। पतले लम्बे व्यक्तियों जिनको भूख कम लगती है, जिनके भोजन में प्रोटीन तत्व बहुत कम होते हैं, कब्ज वाले रोगियों तथा रक्तहीनता (anaemia) वाले रोगियों को भी यह रोग हो जाता है।

मोटे तौर पर निम्न रक्तचाप के अन्य कई कारण हो सकते हैं यथा गरमी के मौसम में अधिक पसीना आने के कारण शरीर में पानी व लवण की कमी हो जाना, किसी दुर्घटना, बवासीर तथा स्त्रियों में मासिक धर्म के दिनों में अधिक रक्तस्राव या गर्भपात के समय अधिक रक्त बहने के कारण या फिर उल्टी व दस्त के कारण शरीर में पानी व लवण तत्वों की कमी हो जाना। इनके अतिरिक्त किसी दवाई या किसी खाद्य पदार्थ से एलर्जी हो जाने या फिर लगातार नींद की गोलियां खाने से भी रक्तचाप निम्न हो जाता है।

लो ब्लड प्रेशर के रोगियों को प्रायः घबराहट रहती है, छाती जकड़ी हुई लगती है, चक्कर आते हैं, किसी काम को मन नहीं करता, कमजोरी एवं जल्दी थकान हो जाती है। सिरदर्द भी रहता है कभी-कभी ठंडा पसीना आने के साथ-साथ बेहोशी भी हो जाती है। इलाज के अतिरिक्त ऐसे रोगियों को चाहिए कि अपने शरीर में पानी की कमी न होने दें।

लो वीपी के लिए आसन

1. शवासन 2. मर्कट आसन (तीन स्थितियां) 3. पवनमुक्त आसन 4. मकरासन 5. भुजंग आसन 6. शलभासन 7. शशकासन 8. ताड़ासन 9. चक्रासन

प्राणायाम

अनुलोम, भ्रामरी, शीतली, उद्गीत, शीतकारी प्रणायाम बाह्य

हार्ट व बीपी के लिए मुद्रा

ध्यान मुद्रा, धारणा मुद्रा

प्वाइंट

- तलवे के नीचे दबाएं
- रिंग फिंगर टाप दबाएं
- ठंडे पानी से स्नान करें
- मुस्कराएं
- श्वास पर ध्यान दें
- घृणा छोड़ने पर बी.पी. नियंत्रण में आता है।
- अंगूठे के प्वाइंट दबाएं
- नर्वस सिस्टम को दबाकर हथेली के बीच में दबाने से किडनी पैर के

- शेष पृष्ठ 6 पर

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का शताब्दी समारोह पूर्वक संपन्न

जो घर पर हैं उन्हें घर पर ही रखने को दें प्राथमिकता -विनय आर्य

शताब्दी समारोह में स्मारिका का विमोचन करते हुए सर्वश्री ठा. विक्रम सिंह, स्वामी सच्चिदानंद, विनय आर्य, रणवीर सिंह, सत्यानंद आर्य एवं मंच संचालन करते हुए सुभाष दुआ, अन्य महानुभाव तथा अउपस्थित आर्यों का जनसमूह।

शुद्धि सभा के शताब्दी समारोह के अवसर पर सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपने उदबोधन में आर्य जनों को संबोधित करते हुए आर्य समाज के द्वारा संचालित भारतीय हिंदू शुद्धि सभा के स्वर्णिम इतिहास को वर्तमान परिस्थितियों से जोड़ते हुए कहा कि आज फिर से आर्य समाज को एक नए परिवर्तन की लहर चलानी ही होगी। जो अपने हैं उनको फिर से गले लगाने का विशेष अभियान चलाना होगा, अपने रिश्तों को बचाना होगा और जो घर में है उनको घर में रखने के लिए प्राथमिकता देनी होगी। क्योंकि वर्तमान परिस्थितियां जो विकराल रूप धारण कर रहीं हैं, उनका सामना करने के लिए महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाएं और स्वामी श्रद्धानंद का संकल्प पूर्ण बलिदान और समर्पण हमारे लिए प्रेरणा की शक्ति और संदेश है। आपने शुद्धि सभा के सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, सदस्यों और उपस्थित आर्यजनों को शताब्दी समारोह की बधाई और शुभकामनाएं दी।

भारत राष्ट्र की आजादी को 76 वर्ष हो चुके हैं। लेकिन महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज की सेवा का गौरवशाली इतिहास 150 वर्ष पुराना है। जिसमें देश की आजादी से लेकर, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, धर्म, संस्कृति, संस्कृत, संस्कार, दलितोद्धार, हिंदुओं की घर वापसी, प्राकृतिक आपदाओं में राहत बचाव के कार्य, निराश्रितों के आश्रय स्थल, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, साधना, समर्पण के प्रेरक अनगिनत कीर्तिमान और राष्ट्र भक्ति एवं मानवता की रक्षा के लिए एक से बढ़कर एक, बड़े से बड़ा बलिदान आर्य समाज ने दिया है। आर्य समाज की इस आंदोलन कारी श्रंखला में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना 100 पूर्व 13 फरवरी सन् 1923 में आगरा, उत्तर प्रदेश में हुई थी। इस सभा का उद्देश्य था शुद्धि, अनाथों और विधवाओं की रक्षा, वैदिक साहित्य का प्रकाशन इत्यादि कल्याणकारी सेवा कार्य। इस सभा के प्रथम प्रधान महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य शिष्य, महान शिक्षाविद और अमर क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानंद जी और मंत्री आर्य समाज के प्रेरणाप्रद आदर्श, डीएवी के संस्थापक सदस्य महात्मा हंसराज थे। इस सभा ने तब से लेकर वर्तमान समय तक लगातार अपने दायित्वों का पूरी निष्ठा से निर्वहन किया है।

2 अक्टूबर 2023 को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 के सभागार में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का शताब्दी समारोह अत्यंत उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ, भजन, व्यायाम प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम और राष्ट्र स्तरीय शताब्दी सम्मेलन समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। जसमें आर्य समाज के विद्वान, संन्यासी एवं कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। सम्मेलन के प्रारंभ में श्री सुभाष दुआ ने अपने स्वागत भाषण में विस्तार पूर्वक सभा की स्थापना से लेकर वर्तमान तक की 100 वर्षीय यात्रा का संक्षिप्त लेकिन सारगर्भित विवरण बताया। आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह जी की अध्यक्षता में सम्मेलन में मुख्य वक्ताओं में दिल्ली प्रतिनिधि सभा के मंत्री, श्री विनय आर्य, सुख्यात हिंदू नेता श्री विनय कृष्ण 'तुफैल' चतुर्वेदी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान एवं सन्यासी स्वामी सच्चिदानंद और जयपुर के महाराजा श्री प्रबल प्रताप सिंह जी जूदेव जी ने खचाखच भरे सभागार को संबोधित किया। स्वामी सच्चिदानंद जी ने शुद्धि सभा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि स्वामी दयानंद ने विधर्मियों को पुन: वैदिक धर्म में प्रविष्ट करा कर शुद्धि का प्रारम्भ किया। तत्पश्चात आर्य समाज द्वारा स्थापित विभिन्न शुद्धि सभाओं के गठन से शुद्धि आंदोलन में तीव्रता आई।

- शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 1 का शेष

(यू.पी.एस.सी.) की निःशुल्क तैयारी हेतु 2023-24 लिखित परीक्षा कार्यक्रम संपन्न

कार्यक्रम में उपस्थित दीपक गुप्ता को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते सर्वश्री धर्मपाल आर्य, अरुण प्रकाश वर्मा, राजकुमार गुप्ता, जोगेन्द्र खट्टर, संचालन करते हुए मनीष भाटिया और लिखित परीक्षा देते हुए विद्यार्थीगण।

विद्यार्थियों को लिखित परीक्षा के लिए दिल्ली बुलाया गया। 8 अक्टूबर 2023 को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल कनाटप्लेस नई दिल्ली में लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित विशेष कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, अध्यक्ष श्री राजकुमार जी, श्री सत्यानंद आर्य जी, प्रधान परोपकारिणी सभा, श्री मानवेन्द्र गोयल जी, भारतीय राजस्व सेवा, श्री संजीव जिंदल, भारतीय राजस्व सेवा, श्री आशीष चंद्रा, भारतीय राजस्व सेवा, श्रीमती उमा शशि दुर्गा, सेवानिवृत्त प्राचार्या, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, उपप्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री जितेंदर सिंह गुप्ता मुख्य महानगर दंडाधिकारी, श्री जोगेंदर खट्टर, महासचिव, दयानंद सेवाश्रम संघ, श्री मनीष भाटिया, कोषाध्यक्ष, आर्य केंद्रीय सभा, श्री संजय कुमार जी व अन्य महानुभावों ने अभ्यर्थियों को उनके उज्जवल भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन मानव निर्माण की नींव होता है, इस अवसर पर आपने शरीर, मन और आत्मा को उन्नत बनाने के लिए पूरी योजना के साथ, पूरी शक्ति के साथ सजग होकर शिक्षा प्राप्त करें, आर्य समाज के सेवा कार्यों और गौरव शाली इतिहास का संक्षिप्त वर्णन करते हुए आपने महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के महत्वपूर्ण अवसर पर भी प्रकाश डाला और सभी विद्यार्थियों को सफलता की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राजकुमार जी ने विद्यार्थियों को आर्य प्रतिभा विकास संस्थान का परिचय देते हुए बताया कि यह संस्थान अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के तत्वाधान में लगातार पिछले 6 वर्षों से सुयोग्य विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिये दिल्ली में नि:शुल्क आवास, भोजन और अच्छी कोचिंग की व्यवस्था प्रदान कर रहा है। परिणाम स्वरूप हमारे संस्थान के विद्यार्थी लगातार सफलता प्राप्त कर रहे हैं। आपने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम में अभ्यर्थियों को डॉ. श्री राकेश बंसल, डीसीपी, राष्ट्रपति भवन, श्री मानवेन्द्र गोयल, कमिश्नर, भारतीय राजस्व सेवा, श्री मनोज गर्ग, भारतीय प्रशासनिक सेवा, श्री संजीव जिंदल, भारतीय राजस्व सेवा, श्री आशीष चंद्रा, भारतीय राजस्व सेवा, श्रीमती उमा शशि दुर्गा, सेवानिवृत्त प्राचार्या, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, उपप्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा, श्री जितेंदर सिंह गुप्ता, मुख्य महानगर दंडाधिकारी, श्री जोगेंदर

- शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरस्कार पाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email- aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

दयानन्द रूपी चन्द्रमा को बारम्बार प्रणाम– कवि अखिलेश मिश्र

या भव-कानन को मतबाद-
दवानल ने बहु भाँति जरायो।
तापै समीरन हू जड़ताई को
ह्वै कै सहायक जोर जनायो।।
देखि दसा स्तुति सागर तैं
'अखिलेसजू' लै जल बोध को धायो।
सान्त कियो ये दयानन्द-मेघ
लहै जग में जय सौख्य सुहायो।।

भावार्थ– इस असार-संसार रूपी महारण्य को मतरूपी दावानल ने अच्छी तरह भस्म किया। उस पर मूर्खतारूपी आंधी ने सहायता करके और जोर बढ़ा दिया। अखिलेशजी कहते हैं यह दशा देख करके वेद महासागरसे बोध रूपी जल लेकर दौड़ा और बुझाया। इस प्रकार यह दयानन्द रूपी मेघ संसार में सुन्दर विजय का सुख प्राप्त कर रहा है।

अलंकार– सांगोपांग रूपक

रवि-वेद सों ग्यान-प्रकास लैके
छिटकाई छटा वसुधा में ललाम है।
पुनि सोभित ह्वै कै दुजाली-तरैयनि
संसृति की नित पूरत काम है।।
बर-बानी-पियूषमयी-किरनालि सों
नासै अविद्या-तमिस्त्रा मुदाम है।
उन चन्द-दयानन्द को 'अखिलेस-
चकोर, को बारहिं बार प्रनाम है।।

भावार्थ– वेद रूपी सूर्य से ज्ञान-प्रकाश ग्रहणकरके पृथ्वी पर अपनी शोभा विकीर्ण की। फिर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि जन रूपी तारागणों से शोभित होकर सम्पूर्ण संसार की कामना पूर्ण करता है। अपनी अमृतमयी वाणीरूपी किरणों से मानवों के हृदयों में फैले हुए अविद्यारूपी अन्धकार को सदैव नष्ट करता है। उन दयानन्दरूपी चन्द्रमा को अखिलेश कविरूपी चकोर का बारम्बार प्रणाम है।

अलंकार- सांगोपांग रूपक

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज बस्ती का स्वर्ण जयंती समारोह संपन्न

राय, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी इत्यादि महानुभावों के बलिदान का संक्षिप्त वर्णन किया और अपने संदेश में कहा कि अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेकर आर्यजनों को सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने के संकल्प लेने का यह स्वर्णिम अवसर है। आपने आर्य समाज बस्ती के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, सदस्यों और विशेष रूप से श्री ओमप्रकाश आर्य जी को इस भव्य आयोजन की सफलता के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और संपूर्ण आर्य जगत की ओर से बधाई दी।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का वेद मंत्रों द्वारा स्वागत किया गया। श्री ओम प्रकाश आर्य जी ने स्वागत भाषण में मुख्यमंत्री जी के साथ आर्य समाज बस्ती की पुरानी यादें ताजा की और उनके आगमन को आर्यवीदल, आर्य समाज, गुरुकुलों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। मुख्यमंत्री जी को सत्यार्थ प्रकाश, यज्ञकुंड और विनय आर्य जी द्वारा विशेष साहित्य भेंट किया गया। श्री ओमप्रकाश आर्य जी के सुपुत्र श्री रचित आर्य जी की स्मृति में पुस्तक का विमोचन किया गया।

माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने अपने क्रांतिकारी उद्बोधन में महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज का यशोगान करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती पूरा देश मना रहा है और आर्य समाज का 150वां स्थापना दिवस भी अगले वर्ष मनाया जाएगा। देश की आजादी से लेकर हर तरह के समाज सुधार में आर्य समाज का योगदान सदैव अविस्मणीय है। महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम स्वराज्य और स्वदेश की आवाज उठाई थी। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिल्ली में आयोजनों का उदघाटन किया और महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रशंसा की थी। देश में जब बड़े पैमाने पर धर्मांतरण कराया जा रहा था, तो उस समय सबसे पहले आर्य समाज ने घर वापसी कराकर उसका जवाब दिया था, वहीं अंग्रेजों ने जब भारतीयों पर तुष्टीकरण की नीति को थोपा तब आर्य समाज ने देश में वैदिक आंदोलन की शुरुआत की, आर्य समाज भारत का जीवंत आंदोलन रहा है, एक समय था बस्ती से लेकर कराची तक आर्य समाज का बोलबाला था। आर्य समाज की आजादी में भूमिका सराहनीय रही है, आर्यसमाज बिना स्वार्थ के समाज सेवा कर रहा है। स्वदेशी आंदोलन चलाया, काकोरी कांड के नायक को कौन भूल सकता है, आर्य समाज के जीवन मूल्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि जब वो आर्य समाज की बात करते हैं तो देश की आजादी के समय में हुए इनके कार्यों की याद आने लगती है, आर्य समाज के संस्थापक महार्षि दयानंद सरस्वती को याद करते हुए उन्होंने कहा कि महार्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज ने हमेशा से भारत के वैदिक धर्म की बात की है, मुगल कालखंड और अंग्रेजी काल खंड के समय में आर्य समाज ने तमाम दिक्कतों के बाद भी हमेशा से हिंदू धर्म की भलाई के लिए काम किया है. शिक्षा के क्षेत्र में भी महार्षि दयानद सरस्वती ने बहुत काम किया। उन्होंने अपने काल खंड में कई समाज सुधार के कार्य किए, सनातन धर्म में व्याप्त छुआछूत और अन्य विसंगतियों के लिएआर्य समाज हमेशा से ही काम करता रहा है।

महर्षि की 200वीं जयंती पर बिहार राज्य में वैदिक धर्म प्रचार यात्रा के बढ़ते कदम

बिहार राज्य के सभी जिलों के सभी प्रखंडों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वें जन्म दिवस पर वेद प्रचार के लिए सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा का रथ पिछले कई महीनों से लगातार गतिशील है। अभी पिछले दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री श्री विनय आर्य जी भी वेद प्रचार रथ यात्रा पर सवार हुए और उन्होंने इसकी हृदय से प्रशंसा की और सभी को बधाई दी। अब तक यह यात्रा बिहार राज्य के 10 जिलों का दौरा कर चुकी है। प्रत्येक जिले के जिलाधिकारी, पुलिस अधिक्षक, अनुमण्डल पदाधिकारी, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी,

अंचलाधिकारी एवं थाना प्रभारियों से मिलकर उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी जरैल प्रखण्ड बेनीपट्टी जिला मधुबनी के संस्थापक श्री सुशील जी या अधिकारीगण उक्त उक्त जिलों के आर्य जनों के साथ भेंट कर चुके हैं। 21/10/2023 को हम बेगूसराय जिले में प्रवेश करेगें।

-आचार्य सुशील, आर्ष गुरुकुल, मधुबनी

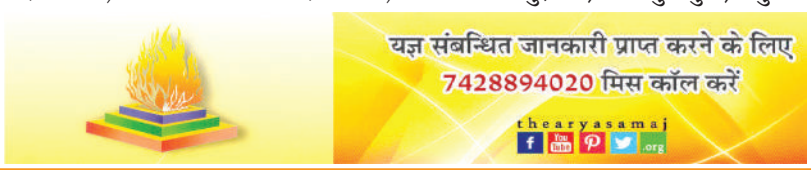

Khandav Forest

Continuing the last issue

When the ancient Aryan religion of India was in this state of decay, the country was attacked by the fourth foreign storm. European races reached the border provinces near the sea of India while scouting the foreign lands. How they got entry into the country, how the country's bad condition helped them to establish their supremacy here, how the British succeeded in establishing dominance after defeating other powers - all these topics belong to political history. We have to see here how the European success affected the religious ideas of India. The European nations brought with them two things – Christianity and Western civilization. Both of these had an impact on India together. Islam came with the sword, it spread with great speed, but it was also resisted with the same speed. Christianity was propagated by another method. In that method, education, organization of propaganda and temptation were the three main means. Christians tried to disturb the educated society of India by opening schools and colleges. For some time there was success in that effort. The missionary organization of the Christians was already excellent, the experience of India brought it to perfection. Indians who became Christians, irrespective of their status, were given preference in government jobs. Thus Christianity slowly but surely began to enter the roots of the country.

As long as Islam was being propagated by the force of the sword, Hinduism also kept flaunting threads around its coat to avoid it, but Akbar and his two successive Emperors made an effort to take the root of Islam to hell by deep calm measures. Then such scoundrels were born who tried to remove the mutual differences between Hindus and Muslims and go under the flag of monotheism. After that when Aurangzeb abandoned the peaceful policy, Hinduism rose up with the sword in north and south. It should be remembered that before Aurangzeb's liberal religious policy, Sikh religion was also attempted to end the differences between Hindus and Muslims.

The promotion of Christianity started with the policy of Akbar. The result was the same. The hearts of believing Indians welcomed the influences of Christianity without any apprehension. Many Indians of great prestige and merit, who would probably have been ready to fall by the sword in the face of the sword's dharma, fell victim to this silent raid. Shortly after the Christian era, Kabir etc. also started taking birth. The Brahmo Samaj in Bengal took up the task of removing the difference between Christianity and Hinduism from the universal form of religion. If we read the history of Brahmo Samaj in detail, we will find that the wish of its leaders was to remove the middle ground between Christianity and Hinduism and make both of them long-lived – Hinduism was to be grafted onto Christianity to remove that friction, Which was bound to happen sooner or later.

Christianity was making inroads into the religious citadel of India by quiet but deep and intricate means. That fort was in a very deplorable condition. The fences of custom and bondage that were built to stop the onslaught of Islam were stopping their own growth. The residents of the fort were divided due to being surrounded by the boundary wall. If we want to summarize the condition of the fort, then we would say that India's own religion - Hinduism - was suffering from the diseases of stereotypes and petty differences. On the one hand, the emphasis on bondage and customs, on the other hand, the destruction of unity due to petty differences – these were the two diseases from which the religious body of India was afflicted. The germs of Christianity were silently entering that body along with air and water. Brahmo Samaj experienced this condition, but tried to stop it. It was then that the water mixed with the germs of Christianity gave some taste. We will not answer these questions whether this treatment will cure the disease or not, whether water mixed with germs will stop entering the body or not, because history has already given the answer.

This was the condition when Maharishi Dayanand bid farewell to Guru Virjanand. What hard work he did to improve this condition, this is the subject of the next ehapters.

पृष्ठ 3 का शेष

तलवे के बीच में दबाएं।

- बी.पी. में सफेद नमक, चीनी, मैदा जहर का काम करते हैं।
- बी.पी. को नियंत्रित करने के लिए गरम पानी पिएं।
- त्रिफला का प्रयोग, आंवला, बहेड़ा का प्रयोग करें।
- हरे धनिया की कम नमक वाली चटनी खाएं।
- लौकी कद्दू का जूस

एंजाइना-अल्पकालिक हृदय-शूल (Angina Pectoris)

यह प्राय: 45 वर्ष की आयु के ऊपर के व्यक्तियों का रोग है। छाती के बाईं तरफ तीव्र वेदना के साथ यह दर्द शुरू होकर बाएं हाथ कलाई तथा अंगुलियों तक आ जाता है। अधिक श्रम के बाद, भय, घबराहट, अधिक भोजन करने के बाद तथा ठंड लगने के बाद यह दर्द उठने की अधिक संभावना होती है। दर्द शुरू होने से पहले बेचैनी, छाती तथा हृदय जकड़े हुए लगते हैं तथा श्वास-प्रश्वास में कठिनाई आती है। अचानक वेदना के साथ शुरू होकर यह दर्द काफी बढ़ जाता है। शुरू-शुरू में रोगी को ऐसा पता लगता है जैसे दिल का दौरा पड़ गया है।

अगर बार-बार एंजाइना का दर्द होता है तो कुछ समय बाद कई मासपेशियाँ क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, कई मर भी जाती हैं। अगर इस रोग का इलाज न कराया जाए तो यह हृदय के दौरे का कारण बन सकता है।

अल्पकालिक हृदय-शूल में दर्द का जोर प्राय: 5 सेकंड से लेकर दो-तीन मिनट तक या कभी-कभी कई रोगियों को इससे भी थोड़ा अधिक समय तक रहता है, फिर अचानक डकार आने या वायु निकलने से दौरा ढीला पड़ जाता है। दर्द के समय सांस लेने में कठिनाई, मुंह लाल तथा बदन ठंडा हो जाता है। ब्लड प्रेशर तेज हो जाता है।

यह रोग अधिक रक्तचाप के कारण होता है। जब मांसपेशियों को रक्त धमनियाँ सिकुड़ने के कारण पर्याप्त मात्रा में आक्सीजन नहीं पहुंच पाती तथा हृदय को अपना काम करने में अधिक जोर लगाना पड़ता है तो यह रोग हो जाता है। सिगरेट पीने के कारण यह बीमारी बढ़ जाती है।

प्रेरक प्रसंग

पं. श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने कहा

पं. श्री ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु ने कहा यह घटना भी सन् 1960 ई. के आसपास की है। पण्डित श्री ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु को काशी के निकट बड़ागाँव में विवाह-संस्कार करवाने जाना पड़ा। उन दिनों आप कुछ अस्वस्थ रहते थे। आने-जाने में कठिनाई होती थी, अत: आप आन्ध्र प्रदेश के अपने एक ब्रह्मचारी धर्मानन्दजी को साथ ले गए।

आप विवाह-संस्कार प्रात:काल अथवा मध्याह्नोत्तर ही करवाया करते थे, परन्तु उस दिन विवाह-संस्कार रात्रि एक बजे करवना पड़ा। कुछ वर्षा भी हो गई और साथ ही बड़ी भयंकर आँधी भी आ गई। बारात गाँव के बाहर एक वृक्ष के नीचे ठहरी। पूज्य जिज्ञासुजी को बड़ा कष्ट हुआ। शिष्य ने लौटते हुए कहा, ''गुरुजी आज तो आपको बड़ा कष्ट हुआ?''

पूज्य ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु ने कहा, बड़े-बड़ों के यहाँ तो सब लोग संस्कार करवाने पहुँच जाते हैं, साधारण लोगों के घर संस्कार करवाने कोई नहीं पहुँचता। यदि कोई बड़ा व्यक्ति इस समय मुझे संस्कार करवाने के लिए कहता तो इस समय मैं कदापि न आता, परन्तु यह व्यक्ति कचहरी में साधारण कर्मचारी है, आर्यपुरुष है। मेरे पास श्रद्धा से आया था, इसलिए विवाह करवाने की स्वीकृति दे दी।

महापुरुषों के जीवन की यही विशेषता होती है। आर्यत्व का यही लक्षण है।

जो तड़प उठे जन पीड़ा से,
वह सच्चा मुनि मनस्वी है।
जो राख रमाकर आग तपे,
वह क्या खाक तपस्वी है।।

जिन धर्मवीरों ने गाँव-गाँव में जनसाधारण तक ऋज्ञि का सन्देश सुनाया, वे सब ऐसी ही लग्न रखते थे।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

पृष्ठ 2 का शेष

सम्मान भी दिया है। इसके अलावा पीएम मोदी खाड़ी के अन्य देशों में भी यात्रा के लिए जाते रहे हैं। भारत और मिडिल ईस्ट के संबंध जहां पहले ज्यादातर व्यापार तक सीमित थे, अब रणनीतिक और राजनीतिक भी हैं। क्योंकि भारत चीन का मुकाबला करने के लिए उभर रहा है। आजादी के बाद से ही इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष पर भारत का बैलेंस बनाकर चलने वाला रहा है। इजरायल को भारत ने 1950 में ही मान्यता दी थी। दोनों देशों के संबंध कुछ खास नहीं बढ़े। लेकिन फिलिस्तीनी अधिकारों का भी समर्थन किया। लेकिन 1962 में भारत-चीन युद्ध और 1965 और 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध में खाड़ी देश न्यूट्रल रहे, जिसके कारण मिडिल ईस्ट को लेकर भारत की रणनीति में बदलाव हुआ।

हालांकि हमास के आतंकियों के इजरायल पर एक के बाद एक लगातार हुए हवाई हमलों से एक यह प्रश्न भी खड़ा हुआ है कि इजरायल की इंटेलिजेंस और वहां की सुरक्षा को लेकर विशेष टैक्नोलॉजी विश्व प्रसिद्ध है। लेकिन फिर भी इतनी बड़ी चूक कैसे हुई? लेकिन कुछ भी हो यह तो वहां अब उनकी जांच का विषय है। लेकिन वहां के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने हमास के हमले के बाद दो बार वीडियो मैसेज जारी किया। इसमें उन्होंने चेतावानी दी कि इजरायल को निशाना बनाने वाले एक भी आतंकी को छोड़ा नहीं जाएगा। वहीं, हमास के हमले के खिलाफ जवाबी कार्रवाई में, इजरायल वायु सेना ने लगातार कई परिचालन मुख्यालयों के साथ-साथ विभिन्न इमारतों पर हमला किये हैं, जहां आतंकवादी संगठन हमास के नेता रह रहे थे। इजरायल वायु सेना के अनुसार, वायु सेना ने तीन मंजिला मुख्यालय और हमास के वरिष्ठ नौसैनिक बल, मुहम्मद काश्ता से जुड़े मुख्यालय पर भी हमला किया। इजरायल ने गाजा पट्टी की मस्जिदों में छिपे हुए आतंकियों को मारने के लिए भी हमले तेज कर दिए हैं। इजरायल पर हुए हमास के रॉकेट हमले में अब तक हजार से ज्यादा और दोनों तरफ से दो हजार से अधिक लोगों की मौत हो गई है।

भारत और इजरायल के रिश्ते जगजाहिर हैं। भारत को इजरायल ने ऐसा निगरानी रखने वाला विमान दिया है जिससे भारत दुश्मन के घर में आसानी से नजर रख पाता है। वर्ष 1999 में जब कारगिल की चोटियों पर पाकिस्तानी सैनिकों ने अड्डा जमा लिया था, तब इजरायल ने ही भारत को बंकर तबाह करने वाले बम दिए थे। भारत के फाइटर जेट ने जब पाकिस्तानी बंकरों पर इन्हें गिराया तो उन्हें भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। इजरायल ने अपने आपातकालीन जखीरे से भारत को ये बम दिए थे जो दोनों देशों के बीच दोस्ती को दर्शाता है। पीएम मोदी के सत्ता में आने के बाद दोनों देशों के बीच दोस्ती एक नई ऊंचाई पर पहुंची है। ऐसे में अब भारत पर सबकी नजरें टिकी रहेंगी। पीएम मोदी ने इस हमले को आतंकी घटना बताकर अपने इरादे साफ कर दिए हैं। लेकिन भारत में ही कुछ लोग अपने राष्ट्र की नीतियों के विरोधी होकर मुखर हो रहे हैं, जो कि किसी भी स्थिति में अनुचित ही है। यह कहावत तो हम बार-बार सुनते हैं कि 'बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना' लेकिन दूसरे की लड़ाई में भारतीय क्यों दीवानेपन की सीमा को लांघ रहे हैं। अपने देश के हितों का ध्यान रखते हुए हमें हर स्तर पर अपने देश के रुख से बेरुखी नहीं करनी चाहिए और अपने देश की नीतियों का अनुकरण करना चाहिए।

-संपादक

महर्षि दयानन्द उवाच परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

आत्मा कोई छीन नहीं सकताः- ठाकुर महाशय! आप हमारे विषय में सर्वथा निश्चिन्त रहिये मैं विपत्ति और बाधाओं के कारण अपने उद्देश्य को नहीं छोड़ सकता। मुझे इन बातों का भय भी नहीं है। हाँ आप राजकर्मचारी हैं, इसलिए आपको भय भी हो सकता है। सो उससे बचने का सर्वोत्तम उपाय यह है कि श्रीमन्त मेरे समीप न आया करें परन्तु मैं तो किसी मनुष्य का नौकर नहीं हूँ। मेरी आत्मा को कोई मनुष्य छीन नहीं सकता। शेष कौन-सा पदार्थ है जिसके छिन जाने का मुझे डर हो सकता है। **(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 384)**

आत्मा का श्रृंगार करोः- मस्तक श्रृंगार करने की अपेक्षा ईश्वरोपासना द्वारा आत्म शृंगार किया करो। ऐसा तिलक लगाने से तुम्हारा क्या प्रयोजन है? आडम्बर रचना महात्माओं का काम नहीं है। यह तुमन कैसी माया रची है। आचारी चुप रहो। शोक, महाशोक! तिलक आदि चिन्ह बनाने में लोगों की रुचि है, योगाभ्यास में नहीं। मूर्खों! तुम यह तिलक लगाते रहे, इतने सयम में गायत्री क्यों न जप ली व्यर्थ समय नष्ट किया। **(म. द. जी. च. बा. दे. पृ. 188)**

आत्मप्रेमीः- सच्चा परमात्मा प्रेमी किसी से घृणा नहीं करता। वह ऊंच-नीच की भेद भावना को त्याग देता है। उतने ही पुरुषार्थ से दूसरों के दु:ख निवारण करता है। क्लेश कष्ट दूर करता है, जितने से वह अपने करता है। ऐसे ज्ञानी जन ही वास्तव में आत्म प्रेमी कहलाने के अधिकारी हैं। **(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 147)**

आत्मोन्नति हेतु कार्यः- 'ब्राह्म' जितने कर्म हैं उनको त्यागकर योगाभ्यासादि आभ्यन्तर कर्मों को यथावत करें। अन्त:करण की सारी मलिनता और राग-द्वेष आदि को छोड़कर निश्चिन्त होकर, सदा वेद का अभ्यास करें। अपने पुत्रों से अन्न, वस्त्र शरीर के निर्वाह के लिए लेवें। नगर के समीप एकान्त में वास करें। प्रतिदिन भोजन आच्छादन घर से लेकर अपनी मुक्ति के साधन में तत्पर रहें।

(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 437)

पृष्ठ 4 का शेष

किसी समय में जबरदस्ती बने मुसलमान या किसी और कारण से हिन्दू धर्म से अलग कर दिये गए विधर्मी जो हिन्दू ध र्म में वापस आना चाहते थे उन सब के लिए शुद्धि कार्यक्रम ने द्वार खोल दिये।

उक्त सम्मेलन में सभा के महामंत्री श्री सुभाष दुआ ने कहा कि सम्मेलन के प्रारंभ में अपने उद्देश्य को बताते हुए कहा कि वर्तमान में शुद्धि का कार्य ही आज का धर्म है और शुद्धि ही अधिकांश समस्याओं का समाधान है। श्री विनय आर्य जी ने शुद्धि के महत्व के साथ-साथ धर्मांतरण पर भी नियंत्रण पर बल दिया। शुद्धि आंदोलन के अंतर्गत, आर्य समाज द्वारा स्थापित विभिन्न सभाओं द्वारा की गई कुछ प्रमुख शुद्धियाँ निम्न प्रकार हैं।

1. स्वामी दयानन्द के कार्यकाल में उमरदीन की प्रथम शुद्धि जिसका परिवर्तित नाम पड़ा अलखधारी। अमृतसर में 40 विधार्मियों की शुद्धि।

2. हिन्दूओं द्वारा कुछ प्रान्तों में रहने वाले मलकाना, मूले जाट, मूले गुजर, इत्यादि जो वैसे राम कृष्ण के उपासक एवं गोभक्त थे, लेकिन कट्टर हिन्दू इन उपजातियों को अपने साथ न मिलाकर, मुसलमानों के साथ जोड़ते थे- ऐसे लोगों की शुद्धि की गई।

राजपूत शुद्धि सभा की स्थापना 1909 में हुई। इस सभा ने 2 वर्ष के अंतराल में 11009 मुस्लिम राजपूतों को शुद्ध कर वैदिक धर्मी बनाया।

सन 1921 में मालाबार केरल के मोप्लो द्वारा हिन्दूओं को बलात मुसलमान बनाया जा रहा था तथा उनकी स्त्रियों पर भी अनेक अत्याचार किये गये। ऐसे समय में महात्मा हंसराज ने आर्य प्रादेशिक सभा की और से एक उत्साही दल को मालाबार भेजा और इसके फलस्वरूप 2500 हिन्दूओं को अपने धर्म में वापस लाया गया। पीडितों की आर्थिक सहायता की गई और नारी उधार किया गया। इस प्रकार आर्य समाज द्वारा अनेक शुद्धियाँ की गई और हिन्दूओं में नवचेतना और जागृति का संचार हुआ। इस कार्यक्रम में लगभग 20 वक्ताओं ने भाग लिया।

-सुभाष दुआ महामंत्री, शुद्धि सभा

पृष्ठ 4 का शेष

खट्टर, महासचिव अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, समाजसेवी श्री मनीष भाटिया, श्री अजय कालरा, रघुमल आर्य सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल के अध्यक्ष सह वरिष्ठ वकील श्री संजय कुमार व अन्य विशिष्ठ व्यक्तियों ने भी संयुक्त रूप से अभ्यर्थियों को संबोधित कर समारोह का शुभारंभ किया।

साथ ही संस्थान की ओर से सभी आगंतुक विशिष्ठजनों को सम्मान चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया। श्री मनोज गर्ग, भारतीय प्रशासनिक सेवा, सचिव भारत सरकार ने भी अपने संबोधन के दौरान समारोह में उपस्थित परीक्षार्थियों को सफलता के मूलमंत्र दिये। साथ ही आर्य समाज द्वारा किए जा रहे इस अनोखे सेवा कार्य और दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में की जा रही नि:स्वार्थ सेवा की काफी प्रशंसा की।

वरिष्ठ रेडियोलॉजिस्ट डॉ. दीपक गुप्ता जी ने संस्थान द्वारा प्रशासनिक सेवा परीक्षा के लिए, बच्चों को मदद के लिए किए जा रहे प्रयासों की उत्कंठ प्रशंसा करते हुए, संस्थान से जुड़े व्यक्तियों के लिए जरूरत पड़ने पर, हर संभव चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध कराए जाने का भरोसा दिलाया। इसके साथ सभी विशिष्ठ महानुभावों ने भी समारोह को संबोधित कर सभी परीक्षार्थियों की सफलता व उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

मंच संचालन श्री जोगेंद्र खट्टर और श्री मनीष भाटिया जी के कुशल मार्गदर्शन में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। श्रीमती डॉ. उमा शशि दुर्गा और श्री जितेंद्र सिंह गुप्ता के मार्गदर्शन में विद्यालय के दक्ष शिक्षक और शिक्षिकाओ द्वारा दयानंद सेवाश्रम संघ के स्वयंसेवकों के सहयोग से परीक्षा प्रक्रिया का कुशल संचालन किया गया। नि:स्वार्थ सेवा देने वाले सभी शिक्षकों को समारोह के दौरान सम्मानित भी किया गया।

-जोगेन्द्र खट्टर, महामंत्री

सोमवार 09 अक्टूबर, 2023 से रविवार 15 अक्टूबर, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 11-12-13 अक्टूबर, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 अक्टूबर, 2023

प्रतिष्ठा में,

Rajiv Gandhi Cancer Institute and Research Centre

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली
(दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था)

के सहयोग से

राजीव गांधी कैंसर इंस्टिट्यूट एवं रिसर्च सैंटर

आयोजित कर रहा हैं

नि:शुल्क कैंसर स्क्रीनिंग / स्वास्थ्य जांच शिविर

दिनांक: शनिवार 14th अक्टूबर 2023

समय: सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक

स्थल : आर्य समाज, मलका गंज, दिल्ली-110007

पैप स्मीयर टेस्ट | क्लीनिकलओरल एग्जामिनेशन | क्लीनिकल ब्रैस्ट एग्जामिनेशन | ब्लड प्रेशर मॉनिटर | रैंडम ब्लड शुगर टेस्ट

अधिक जानकारी के लिए - आर्य समाज मलका गंज
9999690002, 8178813395, 9990232164, 9311363606

• Sector - 5, Rohini, Delhi - 110085 | Tel.: +91 - 11 - 4702 2222 | E-mail: info@rgcirc.org
• Mahendra Kumar Jain Marg, Niti Bagh, South Delhi, New Delhi - 110049 | Tel.: +91 - 11 - 4582 2222 / 2200
E-mail: infosouthdelhi@rgcirc.org | Web: www.rgcirc.org

Connect with us:-

JioTV Jio TV+

आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल

आर्य सन्देश टीवी

Arya Sandesh TV

अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी

Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

ओ३म्

असंख्य लोगों का जीवन बदलने वाला अमर ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करण विविध आकार-प्रकार में उपलब्ध हैं।
प्रस्तुत संस्करण की विशेषता :
सुंदर, आकर्षक, स्पष्ट छपाई , सस्ता प्रचार एवं विशेष संस्करण

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

सह प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Ph : 011-23360150, 23365959

सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं स्वाध्याय करें, दूसरों को प्रेरित करें और अपने इष्ट मित्रों को उपहार स्वरूप भेंट कर इसके प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।

Available on vedicprakashan.com and amazon bit.ly/vedicprakashan

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोन: 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● संपादक: धर्मपाल आर्य ● सह संपादक: विनय आर्य ● व्यवस्थापक: शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह